

---

dashAvatArastotram 3

——  
दशावतारस्तोत्रम् ३

——  
Document Information



---

Text title : dashAvatArastotram 3

File name : dashAvatArastotram3.itx

Category : vishhnu, dashAvatAra, shankarAchArya, vishnu

Location : doc\_vishhnu

Author : Shankaracharya

Transliterated by : Nat Natarajan nat.natarajan at gmail.com

Proofread by : Nat Natarajan nat.natarajan at gmail.com, NA

Description-comments : From Brihatstotraratnakara with 408 stotras

Latest update : June 5, 2016

Send corrections to : sanskrit at cheerful dot c om

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.

**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---


Please note that proofreading is done using Devanagari version and other language/scripts are generated using **sanscript**.

---

December 22, 2023

*sanskritdocuments.org*

---



दशावतारस्तोत्रम् ३



चलल्लोलकल्लोलकल्लोलिनीशस्फुरन्नक्रचक्रातिवक्राम्बुलिनः ।  
हतो येन मीनावतारेण शङ्खः स पायादपायाज्जगद्वासुदेवः ॥ १ ॥

धरानिर्जरारातिभारादपारादकूपारनीरातुराधः पतन्ती ।  
धृता कूर्मरूपेण पृष्ठोपरिष्ठे सदेवो मुदे वोस्तु शेषाङ्गशायी ॥ २ ॥

उद्रग्रे रदाग्रे सगोत्रापि गोत्रा स्थिता तस्थुषः केतकाग्रे षडङ्घ्रे ।  
तनोति श्रियं सश्रियं नस्तनोतु प्रभुः श्रीवराहावतारो मुरारिः ॥ ३ ॥

उरोदार आरम्भसंरम्भिणोसौ रमासम्भ्रमाभङ्गुराग्रैर्नखाग्रैः ।  
स्वभक्तातिभक्त्याभिव्यक्तेन दारुण्यघौघं सदा वः स हिंस्यान्नृसिंहः ॥ ४ ॥

छलादाकलय्य त्रिलोकीं बलीयान् बलिं सम्बवन्ध त्रिलोकीबलीयः ।  
तनुत्वं दधानां तनुं सन्दधानो विमोहं मनो वामनो वः स कुर्यात् ॥ ५ ॥

हतक्षत्रियासृक्प्रपानप्रनृत्तममृत्युत्पिशाचप्रगीतप्रतापः ।  
धराकारि येनाग्रजन्माग्रहारं विहारं क्रियान्मानसे वः स रामः ॥ ६ ॥

नतग्रीवसुग्रीव-साम्राज्यहेतुर्दशग्रीव-सन्तान-संहारकेतुः ।  
धनुर्येन भग्नं महत्कामहन्तुः स मे जानकीजानिरेनांसि हन्तु ॥ ७ ॥

घनाद्गोधनं येन गोवर्धनेन व्यरक्षि प्रतापेन गोवर्धनेन ।  
हतारातिचक्री रणध्वस्तचक्री पदध्वस्तचक्री स नः पातु चक्री ॥ ८ ॥

धराबद्धपद्मासनस्थाङ्घ्रियष्टिर्नियम्यानिलं न्यस्तनासाग्रदृष्टिः ।  
य आस्ते कलौ योगिनां चक्रवर्ती स बुद्धः प्रबुद्धोऽस्तु निश्चिन्तवर्ती ॥ ९ ॥

दुरापारसंसारसंहारकारी भवत्यश्ववारः कृपाणप्रहारी  
मुरारिर्दशाकारधारीह कल्की करोतु द्विषां ध्वंसनं वः स कल्की ॥ १० ॥

इति श्रीमच्छङ्कराचार्यविरचितं दशावतारस्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

Proofread by Nat Natarajan, NA

---

*dashAvatArastotram 3*

pdf was typeset on December 22, 2023

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

